एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार

२३ मई, २०२०, शनिवार

सेवा मंडल एजुकेशन सोसायटी द्वारा संचालित, श्रीमती मणिबेन एम.पी.शाह वुमेन्स कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड कॉमर्स (स्वायत्त) के हिन्दी विभाग द्वारा 'स्त्री लेखन: प्रासंगिकता के स्वर' विषय पर एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन दिनांक २३ मई, २०२०, दिन शनिवार को किया गया था । महामारी की वैश्विक तांडव-लीला में दूरस्थ विद्वद्जनों की विचारधारा ने परम पावन भागीरथी की पीयूष धारा में सद्यस्नाता-सा हर्ष व रोमांच प्रदान किया। महाविद्यालय द्वारा आधुनिक समय की अनिवार्य आवश्यकता बनते जा रहे इस वेबिनार के रूप में जो बीज-वपन किया गया वह भविष्य में निश्चित रूप से पुष्पित और पल्लवित होगा। इस आयोजन ने अपने प्रथम प्रयास में ही देश-विदेश की अनेक सुविख्यात कवयित्रियों और कथाकारों को एक मंच पर प्रतिष्ठित किया। वक्ता रूप में सत्रह प्रबुद्ध जनों ने अपने विचार प्रस्तुत किये जिनका रसास्वदन करने के लिए १३० से अधिक लोग श्रोता बने। भारत के अतिरिक्त यू. एस. ए., बांग्लादेश, नेदरलैंड और यू. के. देश के वक्ता इस अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार में सम्मिलित हुए।

संपूर्ण आयोजन, उद्घाटन से समापन सत्र तक पाँच सत्रों में विभक्त था। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. उषा मिश्रा जी ने किया। उन्होंने सर्वप्रथम कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ करते हुए वर्चुअल मंच पर सबका अभिनंदन किया। तत्पश्चात महाविद्यालय के सिद्धांतों व स्त्री सशक्तीकरण को व्याख्यायित करते, विश्वविद्यालय गीत की प्रस्तुति हुई। मनोविज्ञान वर्ग के एम. ए. प्रथम वर्ष की छात्रा सुश्री श्रुति कुलकर्णी ने इसे अपनी मधुर आवाज़ से सप्राण किया। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. लीना राजे ने स्वागत वक्तव्य देते हुए सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया तथा स्त्री-लेखन क्षेत्र के समृद्ध होने की कामना की|

बीज वक्तव्य देते हुए अनामिका जी ने मृत्युर्मुखी समय में जीवन के सूत्रों का आह्वाहन करने के लिए आयोजन मंडल को नमन करते हुए अत्यंत सारगर्भित, सुगठित व प्रभावपूर्ण वक्तव्य दिया जिसमें उन्होंने स्त्री लेखन, उसके औचित्य, प्रासंगिकता एवं उसके स्वरूप पर अपने विचार प्रस्तुत किये। स्त्री लेखन ने अपनी उदात्तता से पुरुषों को भी शिशु पुरुष से उठकर और अति पुरुष से बचकर आज की ध्रुवस्वामिनी स्त्री के अनुकूल बनने के लिए प्रेरित किया जिसे विकासोन्मुखी, संतुलित और स्वस्थ समाज के लिए सर्वथा उपयोगी कहा जा सकता है। इसी प्रकार उसके बिना दीवारों के घर की संकल्पना ने संकुचित दिलों और परिवार की सीमा के दायरे को विस्तृत किया है। आज अँसुवन जल-सी सींची गई प्रेम बेलि पुष्पित पल्लवित हो चुकी है। अब उसके आनंद फल को खाने का अवसर आ चुका है।

अनामिका जी के उपरांत मुख्य अतिथि के रूप में प्रवासी लेखिका व कवयित्री अनिल प्रभा कुमार जी को आमंत्रित किया गया जिन्होंने समाज,परिवेश के प्रति जागरुकता और संवेदनशीलता को साहित्य के लिए अनिवार्य बताते हुए प्रवासी लेखन के विविध पड़ावों का वर्णन किया। इसमें गृह-स्मृति से उपजे भावों से मुक्त होकर पश्चिमी परिवेश को अपनाने, उसको स्थूल रूप में अंकित करने, भारतीय मूल्यों और पाश्चात्य सभ्यता के बीच पिसती युवा पीढ़ी के विद्रोह, द्वंद्व और नैराश्य को दर्शाने तथा अंततोगत्वा स्वयं को उसी धारा के अंश के रूप में प्रस्तुत करने पर भी मान-सम्मान न पाने की पीड़ा के चरण थे। घरेलू हिसा को वर्णित करते हुए उन्होंने भारतीय और पाश्चात्य स्त्रियों को, संघर्ष के समान धरातल पर देखते हुए स्त्री-पीड़ा की एकरूपता को दर्शाया।

उद्घाटन सत्र का समापन सुविख्यात कथाकार एवं व्यंग्यकार सूर्यबाला जी के अध्यक्षीय वक्तव्य से हुआ। आपने स्त्री व पुरुष लेखन के भेद को नकारते हुए प्रसिद्ध कवियों व लेखकों तथा उनके प्रमुख स्त्री पात्रों की कालजयता को स्पष्ट किया। उन्होंने दोयम दर्ज़े के, घर-आँगन, चूल्हे-चौके, ड्रॉइंग रूम लेखन के रूप में स्वीकृत स्त्री लेखन की गहराई, जीवन से संबद्धता तथा वैश्विक प्रसार द्वारा उसकी सफल यात्रा तथा उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

प्रथम सत्र का संचालन करते हुए डॉ. किरण जी ने बी.एम.रुइया कॉलेज की प्राचार्या डॉ. संतोष कौल जी को विशेष वक्तव्य के लिए आमंत्रित किया। डॉ. संतोष ने मुम्बई की प्रसिद्ध कवयित्री सुश्री चित्रा देसाई जी के काव्य संग्रहों – 'दरारों में उगी दूब' और 'सरसों से अमलतास' की कविताओं के आधार पर आधुनिक जीवन व मानवीय रिश्तों की जटिलताओं तथा मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मताओं का वर्णन करते हुए सकारात्मक एवं जीवटता के माध्यम से मानवता की ऊँचाइयों को प्राप्त

करने का वर्णन किया। 'चलिए कुछ अच्छा-सा-करते हैं, किसी नदी का रुख सूखे खेतों की ओर मोड़ देते हैं', जैसी पंक्तियाँ निस्संदेह सामाजिक समानता की उदात्त भावनाओं की परिचायक हैं।

विशेष अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध कथाकार सुश्री मधु कांकरिया जी ने अपने वक्तव्य में इस बात पर बल दिया कि प्राम्भिक दौर में भले ही स्त्री-लेखन को सार्थक एवं मुकम्मिल स्थान नहीं मिला पर अब चेतना के स्तर पर उसमें आँसू नहीं आग है,पीड़ा नहीं प्रतिरोध है|उसके लेखन और लेखन में चेतना का विस्तार सत्तर के दशक से दिखाई देने लगता है| मधु जी की संवेदना में अभी भी स्त्री पीड़ा को तथा पीड़ा की गहरी पैठी जड़ों को उखाड़ने की आवश्यकता है जिससे समाज की अंतिम पंक्ति में खड़ी स्त्री की पीड़ा का स्पर्श हो, उसका उन्मूलन हो। उन्होंने स्वस्थ समाज के लिए सबकी उन्नति आवश्यक बताई क्योंकि अकेले की मुक्ति अर्थहीन है।

प्रथम सत्र की मुख्य अतिथि के रूप में सुविख्यात कवयित्री सुश्री सविता सिह जी को आमंत्रित किया गया। सविता जी ने पितृसत्तात्मक सत्ता में स्त्री लेखन के प्रारंभिक दौर से लेकर वर्तमान समय की कवयित्रियों की स्वप्रदत्त चुनौतियों को स्पष्ट करते हुए उसे स्वाधीन और स्व-भूमि निर्माती बताया। उन्होंने स्त्री को अपनी आलोचना स्वयं निर्भयतापूर्वक करने का परामर्श भी दिया जिससे उसके कार्यों का सही मूल्यांकन हो सके। नई ज़मीन में पितृसत्ता के स्थान पर चाँद-तारे-आसमान और स्वप्न की आकांक्षा ने उनकी कल्पना की अनंत ऊँचाइयों से परिचित करवाया।

प्रथम सत्र का अध्यक्षीय वक्तव्य एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय की विभागाध्यक्षा प्रो. सुनीता साखरे जी ने दिया। उन्होंने समकालीन कवयित्रियों की कविताओं पर आधारित अपने विचार प्रस्तुत करते हुए, वर्तमान समय की भयावहता के बीच स्त्री जीवन के संघर्ष, पीड़ा एवं शोषण को व्यक्त किया। स्त्री चाहे शिक्षित, संभ्रान्त हो अथवा अशिक्षित आदिवासी, उसके शोषण का अंत नहीं है। उन्होंने पुरुष सत्ता के विरोध एवं स्त्री के स्वत्व मुक्ति के प्रयास को स्पष्ट करते हुए उसके सशक्तिकरण को अनिवार्य बताया।

द्वितीय सत्र का संचालन डॉ. पूनम जी ने सभी का स्वागत किया और सत्र का प्रारंभ करते हुए डॉ. मिथिलेश जी को विशेष वक्तव्य के लिए आमंत्रित किया। डॉ. मिथिलेश शर्मा जी ने सुविख्यात लेखिका कृष्णा सोबती जी के उपन्यास 'साधना सरगम' के आधार पर अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने मनुवादी व्यवस्था के विपरीत, स्त्री-पुरुष में समानता एवं अधिकारों की एकरूपता पर बल दिया। उन्होंने जीवन के अंतिम पड़ाव में भी जीने की चाह रखने वाली स्वाभिमानिनी स्त्री, समझ व तर्क के शस्त्र रखने वाली सजग स्त्री तथा अपने अस्तित्व पर आँच आए बिना प्रेम करने वाली स्त्री के द्वारा जीवन के हर पल को आनंदपूर्वक बिताने की क्रांतिकारी कल्पना को दर्शाया।

अगली वक्ता के रूप में कुसुम त्रिपाठी जी ने महिला आन्दोलन के संदर्भ में स्त्री लेखन की प्रासंगिकता पर अपने विचार प्रस्तुत किये। उनके वक्तव्य में विश्वव्यापी और देशव्यापी आंदोलनों में उठाए गए सभी मुद्दों पर महिलाओं के सशक्त लेखन तथा महिलाओं द्वारा बौद्धिक तर्कों से पाँच हज़ार वर्ष पुरानी पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर कठोर आघात कर, पचास वर्षों में उसकी जड़ें हिलाने का वर्णन विस्तार से प्रकट हुआ। उनके वक्तव्य ने नारी, उसके अधिकार और अधिकारों की रक्षा के लिए बने कानून आदि सभी पक्षों पर प्रकाश डाला।

इस सारगर्भित वक्तव्य के उपरांत अध्यक्षीय वक्तव्य सुप्रसिद्ध रचनाकार सुश्री सुधा अरोड़ा जी ने दिया। सुधा जी ने स्त्रियों द्वारा पुरुषों से अधिक शक्ति से लिखे लेखन की प्रशंसा करते हुए उसे उपार्जित बताया। उनके अनुसार संवेदनात्मक साहित्य की रचना करने वाले सुप्रसिद्ध लेखकों व कवियों के कथन व आचरण में भिन्नता देखी जा सकती है। देश के विभाजन जैसे वर्तमान वातावरण से क्षुब्ध होकर उन्होंने मानव-कल्याण की उदात्त भावनाओं को व्यक्त करते हुए आत्म-मुग्धता से बचने का परामर्श दिया।

तृतीय सत्र को प्रारंभ करते हुए सत्र संचालक डॉ. गीता ने डॉ. जयश्री सिह जी को विशेष वक्तव्य के लिए आमंत्रित किया। डॉ. जयश्री सिह ने देश की वर्तमान दुखद स्थिति, मज़दूर वर्ग, महिलाओं व बच्चों की करुण स्थिति को बताते हुए स्त्रियों के मानवोचित गुणों का वर्णन किया। उन्होंने वर्तमान समय में कठिनाइयों, संघर्षों की विभिन स्थितियों का सामना करती स्त्रियों की भिन्न-भिन्न मनोदशा को भी कारुणिक रूप से अंकित किया। साथ ही उन्होंने विषम परिस्थिति में भी स्त्री द्वारा प्रेम की सर्जना करने, उसमें ढल जाने तथा सुखांत के लिए छटपटाने की स्थिति का सुंदर वर्णन किया।

तृतीय सत्र की विशेष अतिथि के रूप में यू.के. की सुश्री शिखा वार्ष्णेय जी ने पश्चिमी क्रांति की चर्चा करते हुए ब्रिटेन के रचनाकारों के मुद्दों, तथा प्रवासी भारतीयों की मनोदशा को स्पष्ट किया। प्रवासी कथाकारों की कहानियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने दो संस्कृतियों के टकराव, गुलाम मानसिकता पारिवारिक-वैवाहिक समस्याओं तथा पुत्र-मोह आदि को व्यक्त किया। स्त्रियों की संवेदनाओं, समस्याओं और सरोकारों के प्रति लेखिकाओं की जागरुकता तथा अपनी ज़मीन प्राप्त करने के उपरांत भी अपने हिस्से के आसमान को प्राप्त करने के शेष कार्य क़े प्रति आशा व्यक्त की।

तृतीय सत्र के अध्यक्षीय वक्तव्य के लिए प्रो. पुष्पिता अवस्थी जी ने तकनीकी व्यवधान के कारण समापन सत्र में अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने भारतीय संस्कृति को विश्व संस्कृति की सुरक्षा में सक्षम मानकर जीवन और जीने का दृष्टिकोण बदलने की आवश्यकता पर बल दिया। संवेदना और कोमलता के विकास से ऐसे लेखन को उपयोगी बताया जो पाठकों की अंतर्शक्ति, गुणों को विकसित कर सके। उन्होंने गाँधी जी और विनोबा जी के मार्ग का अनुसरण करके स्त्री-पुरुष की समानता, स्त्री शक्ति की प्रतिष्ठा के द्वारा भारतीय संस्कृति की अनूठी अस्मिता को अनन्त काल तक शांति-स्थापन में समर्थ माना।

समापन सत्र का प्रारम्भ करते हुए डॉ. उषा मिश्रा ने सर्वप्रथम अभिमत के लिए शोधार्थी वंदना गुप्ता को आमंत्रित किया। उन्होंने सुप्रसिद्ध विद्वद्जनों से प्रतिष्ठित मंच की महिमा को स्पष्ट करते हुए स्त्री लेखन द्वारा सशक्त स्वर प्राप्त कर, पितृसत्तात्मक विचारों की बेड़ियों में जकड़ी एवं परंपरा, संस्कारों की रूढ़ियों में बद्ध स्त्री के नवीन चेतना से पूर्ण होने की चर्चा की। स्त्री समाज में, पुरुषों की जय-पराजय से पृथक, अपने स्थान व स्वत्व के लिए सचेष्ट होकर समाज का उपयोगी अंग बनने की कामना करती है। अंत में गगन जी के शब्दों से उधार लेकर रचने के बाद रचना के मुक्त हो जाने तथा स्वयं अपना जीवन प्रारंभ करने का उल्लेख करते हुए उसे स्त्री, पुरुष लेखन से पृथक बताया।इसके पश्चात स्नातकोत्तर की छात्रा साक्षी ने इस आयोजन को छात्राओं के लिए ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी बताया। कोरोना महामारी के कारण सब कुछ बंद होने पर इस ज्ञान से सोचने की दिशा तथा इस क्षेत्र में कार्य करने हेतु मिले उत्साह का वर्णन किया।

समापन सत्र के विशेष अतिथि डॉ. अनिल सिह ने स्त्री की संघर्ष शक्ति, संतुलन बनाने की शक्ति तथा सृजन शक्ति का उल्लेख करते हुए, समाज के स्वस्थ विकास के लिए स्त्री-पुरुष को एक दूसरे का पूरक बताया। इस सत्र के दूसरे विशिष्ट अतिथि डॉ. सतीश पांडेय जी ने अपने वक्तव्य में सविता सिह जी, डॉ. जयश्री सिह जी, कुसुम त्रिपाठी जी के वक्तव्यों के अंशों का उल्लेख करते हुए स्त्री की संवेदना शक्ति की प्रबलता तथा अनेक प्रासंगिक मुद्दों जैसे - बलात्कार, लिग-परीक्षा, यौन शुचिता और समलैंगिकता आदि पर स्त्री लेखन की गंभीरता को व्यक्त किया। अनामिका जी के बीज वक्तव्य से स्त्री के संबलन तथा पुरुष के चित्त विस्तार द्वारा स्त्री-लेखन की प्रासंगिकता को स्पष्ट किया। उन्होंने स्त्री लेखन में विस्तार की आवश्यकता पर बल दिया और उसे कालजयी होने के लिए स्त्री केंद्रित विषयों के अतिरिक्त सघन मानवीय विषयों तक फैलना अनिवार्य बताया।

प्राचार्या डॉ. लीना राजे जी ने सभी गणमान्य अतिथियों का धन्यवाद-ज्ञापन किया और देश-विदेश के साहित्यकारों के मूल्यवान विचारों को विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बताते हुए भविष्य में पुन: कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने हेतु आमंत्रित किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए मृदुला गर्ग जी कुछ सवालों का उत्तर देते अश्लील साहित्य को नकारते हुए उसे भदेस बताया तथा ऐसी पुस्तकों को न पढ़ने का परामर्श दिया। अपने वक्तव्य में उन्होंने अनेक उदाहरणों से स्पष्ट किया कि स्त्री लेखन में मात्र स्त्री वेदना के स्वर अथवा प्रभाव का उल्लेख नहीं होता। उन्होंने प्रासंगिकता के लिए इतिहासोन्मुखता को अनिवार्य बताया। कोरोना महामारी को भी मनुष्य द्वारा प्रकृति के अति-दोहन का प्रतिशोध तथा मज़दूरों की दुर्दशा के लिए मलिन पूँजीवादी व्यवस्था और असुरक्षित, अपर्याप्त सामाजिक व राजनैतिक नीतियों को दोषी बताया। मृदुला जी ने लेखन को वादों से पृथक माना और संस्कृति की अपेक्षा मानवीय मूल्यों की रक्षा पर बल दिया। उन्होंने मातृत्व को शक्ति व संघर्ष का रूप बताया जो मात्र स्त्री के पक्ष में आता है। पुरुषों द्वारा हीन भावना से ग्रस्त होकर तथा अस्वस्थ मानसिकता के वशीभूत होकर किए जाने वाले बलात्कार को जघन्य हिसा के रूप में स्वीकार किये जाने को समाज में आया क्रांतिकारी परिवर्तन बताया। इन सभी का वर्तमान साहित्य में वर्णन मिलता है जो उसे प्रासंगिक बनाता है। उनके अनुसार करूणा, न्याय, संवेदना, समानता, मानवता के शाश्वत मूल्य सार्वकालिक प्रासंगिक होते हैं, चरित्र के निर्माता होते हैं तथा हमारे समक्ष प्रश्न उपस्थित करते हैं कि हम मनुष्यता के साथ हैं अथवा कायरों की भाँति मूक दर्शक हैं।

इस प्रकार महाविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार में स्त्री–लेखन की प्रासंगिकता के अनेक आयामों पर चर्चा हुई |महामारी के दौर में आयोजित इस तरह के आयोजन भविष्य में एक–दूसरे से मिलने (भले ही मिलन वर्चुवल हो),विचारों को जानने का एक सफल मंच सिद्ध हो सकता है|

प्रस्तुति : सुश्री वंदना गुप्ता

शोध छात्र